

दोहरे घाटे की समस्या

हाल ही में वित्त मंत्रालय ने अपनी 'मासिक आर्थिक समीक्षा' में अर्थव्यवस्था में दोहरे घाटे की समस्या के फरि से उभरने की चेतावनी दी है, जिसमें कमोडिटी की कीमतों में बढ़ोत्तरी और सब्सिडी के बढ़ते बोझ के कारण राजकोषीय घाटे(**fiscal deficit**) और चालू खाता का घाटा (**Current Account Deficit-CAD**) दोनों में वृद्धि हुई है।

- यह पहली बार है जब सरकार ने चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय क्षतिकी संभावना के बारे में स्पष्ट रूप से बात की है।

प्रमुख बढ़ि

रपोर्ट की प्रमुख वशिषताएँ:

- दुनिया मुद्रास्फीतजिनति मंदी/स्टैगफ्लेशन की एक अलग संभावना देख रही है।
- **हालाँकि, भारत अपनी वविकपूर्ण स्थिरीकरण नीतियों के कारण, स्टैगफ्लेशन के जोखमि में कुछ हद तक सुरक्षति है।**
- इस बीच, भारतीय वित्तीय बाजारों ने पछिले आठ महीनों में भारी वदिशी नविश का बहरिवाह देखा गया है। कमज़ोर जीडीपी वकिस परदृश्य ने इस स्थिति को और बढ़ा दिया है।
- एक ब्लैक स्वान घटना में जिसमें कई उतार-चढ़ाव शामिल हैं, में सकल घरेलू उत्पाद के 7.7% के पोर्टफोलियो नविश तथा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 3.9% की अल्पकालिक व्यापार ऋण छँटनी के तहत बहरिवाह की 5% संभावना है।

दोहरे घाटे की समस्या का प्रभाव:

- दोहरे घाटे की समस्या, वशिष रूप से चालू खाता घाटा, महँगे आयात के प्रभाव को बढ़ा सकती है तथा रुपए के मूल्य को कमज़ोर कर सकती है जिससे बाहरी असंतुलन और बढ़ सकता है।

आगे की राह

- राजस्व व्यय में कटौती करें (वह धन जो सरकार अपनी दैनिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिये खर्च करती है)।
- घरेलू वनिर्माण को बढ़ावा देना और अनावश्यक वस्तुओं के आयात में कमी करना।
- **वविकपूर्ण राजकोषीय नीति:** सरकार को पूंजीगत और राजस्व व्यय दोनों को युक्तसिंगत बनाना चाहिये और राजकोषीय फसिलन से बचने के लिये एक संतुलित बजट के लिये जाना चाहिये।

मुख्य बढ़ि:

- **राजकोषीय घाटा:** यह सरकार की व्यय आवश्यकताओं और उसकी प्राप्तियों के बीच का अंतर है। यह उस धन के बराबर है जिसे सरकार को वर्ष के दौरान उधार लेने की आवश्यकता होती है।
- **चालू खाता घाटा (CAD):** चालू खाता देश में और बाहर माल, सेवाओं और नविश के प्रवाह को मापता है। यह एक देश के वदिशी लेनदेन का प्रतनिधित्व करता है और, पूंजी खाते की तरह, देश के भुगतान संतुलन (BoP) का एक घटक है।
- **दोहरे घाटे की समस्या:** चालू खाता घाटा और राजकोषीय घाटा (जिसे "बजट घाटा" के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी स्थिति है जब किसी देश का व्यय उसके राजस्व से अधिक होता है) को एक साथ दोहरे घाटे के रूप में जाना जाता है और दोनों अक्सर एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं।
- **स्टैगफ्लेशन:** इसे अर्थव्यवस्था में एक ऐसी स्थिति के रूप में वर्णित किया जाता है जहाँ वकिस दर धीमी हो जाती है, बेरोज़गारी का स्तर लगातार ऊँचा रहता है और फरि भी मुद्रास्फीति या मूल्य स्तर एक ही समय में उच्च रहता है।
- **ब्लैक स्वान घटना:** यह इतिहास में अनुभव किये गए सभी प्रतिकूल समस्याओं के एक साथ आने आने से संबंधित हो सकती है, जिससे एक विकराल स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न (पीवाईक्यू)

प्रश्न. शासन के संदर्भ में नमिनलखिति पर वचिर कीजयि: (2010)

1. प्रत्यक्ष वदिशी नविश अंतरवाह को प्रोत्साहति करना
2. उच्च शक्तिषण संस्थानों का नजीकरण
3. नौकरशाही का आकार कम करना
4. सार्वजनकि क्षेत्र के उपक्रमों के शेयरो की बकिरी/ऑफलोडगि

भारत में राजकोषीय घाटे को नयितरति करने के उपायों के रूप में उपरोक्त में से कसिका उपयोग कयिा जा सकता है?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 1, 2 और 4
- (d) केवल 3 और 4

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- सामान्य तौर पर राजकोषीय घाटा तब होता है जब सरकार का कुल व्यय उसके राजस्व से अधिक हो जाता है। सरकार राजकोषीय घाटे को कम करने के लिये कई उपाय करती है जैसे कर-आधारति राजस्व बढ़ाना, सब्सिडी कम करना, वनिविश आदि।
- नौकरशाही का आकार घटाने के साथ-साथ सार्वजनकि क्षेत्र के उपक्रमों के शेयरो को बेचने/ऑफलोड करने से राजकोषीय घाटे में कमी आती है।
- गंतव्य और एफडीआई प्रवाह के प्रभाव को जाने बना राजकोषीय घाटे पर इसके वास्तवकि प्रभाव को नरिधारति करना मुश्कलि है। उच्च शक्तिषण संस्थानों के नजीकरण से स्थितिमें सुधार हो सकता है लेकनि इसका प्रभाव राजकोषीय घाटे को कम करने में कारगर नहीं हो सकता है।
- अतः कथन 3, 4 सही हैं और कथन 1, 2 सही नहीं हैं। अतः वकिल्प (d) सही उत्तर है।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/twin-deficit-problem>

